परिचय

नये नियम की हर पुस्तक पहली सदी को समझने में हमारी सहायता करती है, परन्तु इब्रानियों की पुस्तक इस मामले में सबसे व्यावहारिक पुस्तकों में से एक है।

> बीसवीं सदी (और इक्कीसवीं सदी) के इब्रानियों के पाठक इन आरम्भिक प्राप्तकर्त्ताओं से तुरन्त मिल जाएंगे जब यह देखेंगे कि संसार की बढ़ती उथल-पुथल और शक्तिशाली सांस्कृतिक दबावों के बीच अधिक आरामदायक अतीत में लौटने के बीच यीशु में अपने विश्वास को पकड़े रखने के लिए उन्हें किस प्रकार से संघर्ष करना पड़ा था।[1]

आज कुछ लोग संस्कृति को जीने के ढंग को इस प्रकार से लुभाने की अनुमति देते हैं जो उस जीवन के उलट है, जो मसीह में हमें मिला है, परन्तु इब्रानियों की पुस्तक हमें डटे रहने को कहती है। यह हम से यह विश्वास करने को कहती है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और सब सृजित प्राणियों और वस्तुओं से ऊपर है। यह उसकी मृत्यु और उसके शारीरिक पुनरुत्थान पर भरोसा रखने को कहती है। इसके अलावा, यह कहती है कि हम स्वर्ग में हमें सुरक्षित लाने के लिए किए गए किसी सेक्रामेंट पर निर्भर न हों।

इब्रानियों की पुस्तक लिखने का लेखक का उद्देश्य "मसीही लोगों को मसीह से जोड़ना" यानी पाठकों को हर हाल में विश्वासयोग्य बने रहने के लिए प्रोत्साहित करना था (2:1; 3:12; 4:1; 6:1–12; 10:22–25; 12:25)। इसका विषय 3:12, 13 में ठहराया गया है:

> हे भाइयो, चौकस रहो, कि तुम में ऐसा बुरा और अविश्वासी मन न हो, जो तुम्हे जीवते परमेश्वर से दूर हटा ले जाए। वरन जिस दिन तक आज का दिन कहा जाता है, हर दिन एक - दूसरे को समझाते रहो, ऐसा न हो, कि तुम में से कोई जन पाप के छल में आकर कठोर हो जाए।

पत्री का एक और उद्देश्य यह दिखाना है कि मसीही लोग हमारे महायाजक यीशु मसीह के पवित्र करने वाले काम के द्वारा परमेश्वर तक पहुंच करें। केवल इब्रानियों ही नये नियम की पुस्तक है, जो मसीह की याजकाई और वाचा की शिक्षाओं को विस्तार से बताती है। यह यहूदी मसीही लोगों की मसीह में नई आशा पर फोकस करती है।

इस पुस्तक के संदेश के नीचे डॉक्ट्रिन की गलतियां समझ आती हैं। उदाहरण के लिए जो लोग पवित्र शास्त्र के स पूर्ण प्रेरणा से होने का इनकार करते हैं इब्रानियों की पुस्तक उनके लिए एक डांट है क्योंकि इसमें समस्त पुराने नियम के परमेश्वर की प्रेरणा से होने का उच्च विचार है। इब्रानियों 1:5–13 पुराने नियम को सीधे तौर पर परमेश्वर द्वारा बोले जाने के रूप में बताता है और इस प्रकार से यह दिखाता है कि बाइबल सही अनुवाद दिए जाने पर परमेश्वर का वचन ही रहता है! निश्चय ही पवित्र शास्त्र के लिए परमेश्वर की प्रेरणा से होने का उच्च विचार बाइबल में उतना नहीं मिल सकता, जितना इब्रानियों की पुस्तक में है।

इसी प्रकार से पवित्र शास्त्र इस शिक्षा का खण्डन करता है कि यहूदी मत को इसके मन्दिर

के साथ फिर से बहाल कर दिया जाएगा। यह तो "उत्तम" (श्रेष्ठ) से "निम्न" (घटिया) की ओर लौट जाना होगा। इब्रानियों 8:13 संकेत देता है कि यहूदी मत का धार्मिक प्रबन्ध और मन्दिर जल्द ही हटाए जाने, और सदा के लिए मिटाए जाने वाले थे।

पत्री के कई मुख्य शब्दों पर ध्यान दिया जा सकता है। दो शब्द जो विशेष रूप में मिलते हैं, वे "सदाकाल" (5:9; 6:2; 9:12, 14, 15; 13:20) और "उत्तम" (1:4; 6:9; 7:7, 19, 22; 8:6; 9:23; 10:34; 11:16, 35, 40; 12:24)। मसीह के द्वारा परमेश्वर ने हमारे लिए "कोई उत्तम वस्तु" उपलब्ध करवाई है (11:40)। वास्तव में व्यवस्था से "उत्तम" नई वाचा स्पष्टतया अब तक दी जाने वाली *बेहतरीन* चीज़ है। "अनन्त मीरास" की प्रतिज्ञा दी गई है! (देखें 9:15.)

लेखक

शायद शालीनता के कारण बाइबल के लेखकों ने कई बार अपने लेखों से अपने नामों को मिटा दिया। ऐसा सुसमाचार के विवरण के लेखकों द्वारा और यूहन्ना द्वारा अपनी पत्रियों में किया गया। यह इस बात का कारण हो सकता है कि लेखक का नाम इब्रानियों की पुस्तक से गायब है।

लेखक का नाम पुस्तक के सम्बन्ध में कहीं मिलता है, इस कारण इसे कई सम्भावित लेखकों के साथ जोड़ा गया है। अनुमानों का सुझाव दिया गया है कि इब्रानियों की पुस्तक रोम के क्लेमेंट, सीलास, या अकविला और प्रिसकिल्ला द्वारा लिखी गई; परन्तु अधिक विश्वास करने वाला अपुल्लोस, बरनबास और पौलुस की ओर संकेत करता है।

अपुल्लोस

यह थ्योरी कि अपुल्लोस ने इस पुस्तक को लिखा इब्रानियों के लेखक और सिकन्द्रिया के यहूदी धर्मशास्त्री फिलो ज्युडियुस द्वारा प्रयुक्त शब्दों की समानताओं पर आधारित है (लगभग 20ई.पू—लगभग 50ईस्वी)।[2] अपुल्लोस सिकन्दरिया का रहने वाला था (प्रेरितों 18:24), परन्तु इब्रानियों के साथ मिलाने के लिए हमारे पास उसका कोई लेख नहीं है। यदि यह अनुमान मान्य होता तो लगता है कि सिकन्द्रिया के क्लेमेंट ने, जिसने 200ईस्वी के निकट लिखा, इसका उल्लेख किया होता। इसके बजाय उसने यह निष्कर्ष निकाला कि इसका लेखक पौलुस था।[3] इस विचार की रक्षा के लिए चतुराई भरे तर्क के इस्तेमाल के बावजूद इस सुझाव में कि अपुल्लोस ने इब्रानियों की पुस्तक लिखी भी पाई है।

बरनाबास

लेखक के रूप में बरनबास पर विचार किए जाने के लिए कुछ ऐतिहासिक समर्थन दिया जा सकता है। टर्टुलियन जिसकी मृत्यु लगभग 200ईस्वी के निकट हुई, ने "इब्रानियों की पत्री बरनबास के नाम" होने की बात की और फिर उस पुस्तक में से उद्धृत किया जो आज बाइबल में है।[4] उसके लेवियों में से होने के कारण बरनबास द्वारा लिखे जाने की सम्भावना को कुछ हद तक माना जा सकता है, जो इब्रानियों की पुस्तक लेवियों की गतिविधियों की बहुत बात करती है; परन्तु फिर यहां पर हमारे पास उसका लिखा कोई लेख नहीं है, जिसे इब्रानियों की पुस्तक

के साथ मिलाया जा सके।

बरनबास का यरूशलेम की आरम्भिक कलीसिया के साथ निकट और मैत्री सम्बन्ध था (प्रेरितों 4:36, 37; 11:24, 26-30)। प्रेरितों 14:14 में उसे "प्रेरित" बताया गया है, जिसका अर्थ यह होगा कि उसे कलीसियाओं के "दूत" के रूप में या यरूशलेम की कलीसिया द्वारा अन्य क्षेत्रों में भेजा गया था।

पौलुस

रेय सी. स्टैडमैन ने कहा है कि उसके सेमिनरी के दिनों का एक चुटकुला था कि "इब्रानियों के नाम पौलुस की पत्री को किसने लिखा?"[5] मुख्य धारा की वर्तमान विद्वता इस बात से इनकार करती है कि इसके लिखे जाने से पौलुस का कोई सम्बन्ध था और कुछ अर्थ में प्राचीन परम्परा को एक ओर कर देती है, जो इब्रानियों की पुस्तक को पौलुस की बताती है। ऐतिहासिक प्रमाण हमेशा भरोसे के योग्य नहीं होता, परन्तु हम उनकी गवाही को नकार नहीं सकते जिनका मानना है कि पौलुस ने इस पुस्तक को लिखा।

पौलुस के लेखक होने का प्रमाण। पौलुस की सोच को विशेष रूप में "वाचा" शब्द में बार -बार दोहराया गया है (इब्रानियों 7:22; 8:6-10, 13; 9:1, 4, 16, 17; 10:16, 29; 12:24; 13:20)। अनुवादित शब्द "नियम" (*diathēkē*) जिसका अर्थ "अनुबंध," विशेषकर "वसीयत" या "वाचा" है, पौलुस के लेखों में आम मिलता है (देखें रोमियों 9:4; 11:27; 1 कुरिन्थियों 11:25; 2 कुरिन्थियों 3:6, 14; गलातियों 3:15, 17; 4:24; इफिसियों 2:12)।

एक थ्योरी यह है कि यरूशलेम में रहते हुए पौलुस ने रोमी यहूदियों को प्रवचन के रूप में इब्रानियों की पुस्तक का संदेश दिया। यह भी माना जाता है कि रोम में पहुंचने पर उसने वह संदेश लूका को लिखवाया हो सकता है जिसने प्रकाशन के लिए इसे पौलिश किया। मूल में यह प्रवचन था, इस बात का सुझाव इससे मिलता है कि "समय नहीं रहा" (11:32) वाक्य में मिलता है जो "किसी भाषण में आम तौर पर इस्तेमाल होने वाली यूनानी भाषा की किस्म" को दिखाता है।[6] "उपदेश की बातों" (13:22) की अभिव्यक्ति का स्पष्ट अर्थ प्रेरितों 13:15 वाला प्रवचन है।[7] प्रेरितों में लूका के लिखने की शैली इब्रानियों की पुस्तक की शैली जैसी ही है जो इस सम्भावना का सुझाव देता है कि लूका इब्रानियों के लिए पौलुस का *amanuensis* ("ग्रंथी") था।

यदि इब्रानियों की पुस्तक पौलुस द्वारा रोम में लूका से लिखवाई गई तो यह मानना तर्कसंगत है कि एक प्रति वहां रखी गई होगी। यदि ऐसा है तो रोम के लोगों को कुछ सालों तक इसका पता होगा। परन्तु यदि रोम के क्लेमेंट (जिसने लगभग 96ईस्वी में लिखा) को लेखक की पहचान थी, तो उसने ऐसा बताया नहीं।

कलीसिया के और पुरखों को इब्रानियों की पुस्तक के लेखक के सम्बन्ध में बहुत कुछ कहना था:

सिकन्द्रिया के क्लेमेंट का (लगभग 150ईस्वी-लगभग 215ईस्वी)। एक यूनानी धर्मशास्त्री

ने पुस्तक को इब्रानी भाषा में इब्रानियों के नाम पौलुस द्वारा लिखी गई और लूका द्वारा यूनानी में अनुवाद की गई पुस्तक के रूप में देखा।[8]

ओरिगन (लगभग 185ईस्वी–लगभग 254ईस्वी) जिसे आरम्भिक कलीसिया के सबसे बड़े धर्मशास्त्री और बाइबल के विद्वान के रूप में देखा जाता है, इसे पौलुस का संदेश मानता था; परन्तु उसका मानना था कि सम्पादक का काम किसी और ने किया।[9]

जेरोम (लगभग 347ईस्वी–लगभग 420ईस्वी) लातीनी धर्मशास्त्र (द वलगेट) का अनुवादक, पौलुस के लेखक होने के संदेहों से अवगत था। तौभी उसने कहा, ''हमें यह मानना होगा कि इब्रानियों के नाम लिखी यह पत्री पौलुस की मानी जाती है, केवल पूर्व की कलीसियाओं के द्वारा ही नहीं बल्कि कलीसिया के उन सभी लेखकों द्वारा जिन्होंने आरम्भ से यूनानी भाषा में लिखा है।''[10]

यह मानते हुए कि यूनानी में लिखने वाले कलीसिया के सभी पुरखे इब्रानियों को पौलुस का लिखा मानते थे। यह अजीब बात है कि उनकी स्वीकृति को अधिक महत्व नहीं दिया जाता। बेशक उन्हें मालूम था कि इब्रानियों में यूनानी भाषा का इस्तेमाल पौलुस के लेखों की विशेषता नहीं है, सो उनके पास लेखक के रूप में पौलुस को मानने के और मज़बूत कारण होंगे।

पौलुस के लेखक होने पर आपत्तियां। विलियम लियोनार्ड ने इब्रानियों की पुस्तक के पौलुस के लेखक होने की बात को ऐतिहासिक, साहित्यिक और शिक्षा के कारण मानने पर कई आपत्तियां बताई हैं।[11]

1. *शैली।* लिखने की शैली का अन्तर मानक आपत्ति है। लियोनार्ड ने यह कहते हुए इस शैली की समस्या का वर्णन किया है:

> पत्री की भाषा कुल मिलाकर पौलुसी मानक से ऊपर की है, क्योंकि इसकी शब्दावली पूर्ण है, ... वाक्य रचना की विशेष बात इसका शांत, कलात्मक निरन्तर होना है। ... प्रभावशाली हलचल शांत विचारक वाली है न कि उत्साही प्रेरित वाली। ''क्या तुम नहीं जानते,'' ''तो हम क्या कहें?'' जैसे रूखे, ताबड़-तोड़ वाक्यों, प्रश्नवाचक बातों का न होना आश्चर्यजनक ढंग से स्पष्ट है। लय में यूनानी भाषी साहित्यिक पूर्णता *इब्रानियों* की पुस्तक को विशेष रूप से सुन्दर वस्तु बना देती है। इसका पूरा रंग लेवियों का सा है और इस कारण पौलुस की आत्मा से बाहरी है।[12]

इब्रानियों की पुस्तक का विषय पौलुस की पत्रियों से इतना भिन्न है कि वास्तविक शैली की तुलना करना कठिन है। शैली फिलेमोन की पुस्तक की वाकपटुता से अधिक नीचे नहीं है, जिसे शायद ही पौलुस की होने का इनकार किया गया हो। इसके अलावा यदि इसे सरमन के रूप में तैयार किया गया और बाद में लिख लिया गया हो तो शब्दों जैसी कविता से मिलते होना इस बात को सिखाता है कि बोलने वाला इस बात को अच्छी तरह से जानता था कि सरमन के साथ लोगों का ध्यान कैसे बनाए रखना है। थॉमस जी. लॉन्ग ने यह पटकथा प्रस्तुत की:

> यह तो ऐसा है, जैसे इब्रानियों की पुस्तक को लिखने वाला प्रचारक सरमन नोट्स

को पुलपिट पर कहीं बिखरा देता है, मण्डली की ओर देखता है, नाटकीय असमंजस में एक पल के लिए रुकता है और फिर मानवीय हृदय की धड़कन की तरह अनुग्रहपूर्वक और लयबद्ध शब्दों "*Polimers kai polytropos palai ...*" ("पूर्व युगों में कई भागों में और कई रूपों में ...," 1:1) के साथ आरम्भ करता है।[13]

फिलेमोन और इफिसियों का मूल्यांकन करके लियोनार्ड ने दिखाया कि पौलुस ने इब्रानियों के विलक्षण रूपों वाले उन्हीं मूल शब्दों का इस्तेमाल किया।[14] कुछ रूपक उसकी शब्दावली में पूरी तरह से नये लग सकते हैं परन्तु इब्रानियों में ऐसा कोई शब्द नहीं है, जो पौलुस के मन में असम्भव हो।

2. *प्रेरिताई।* "जिसकी चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई और सुनने वालों के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ..." वाक्य के आधार पर लेखक को मानने की एक और आम आपत्ति यह है कि यह उस प्रकार से मसीह का प्रत्यक्षदर्शी नहीं था, जैसे प्रेरित थे। परन्तु यह भी सच है कि पौलुस ने कई बार अपने आपको अपने पाठकों के साथ मिलाया। उदाहरण के लिए इफिसियों 2:3 में उसने अपने आपको पूर्व इफिसुस पापियों की श्रेणी में रखा; परन्तु निश्चय ही एक धर्मी यहूदी के रूप में उसका आचरण वैसा नहीं था, जैसा बताया गया।

तो यह सम्भव है कि इब्रानियों के नाम यह अद्‌भुत दस्तावेज पहले सरमन के रूप में दिया गया हो जिसे पौलुस द्वारा तैयार किया गया और प्रस्तुत किया गया और फिर नोट्स से किसी और द्वारा (सम्भवतया लूका) लिखा गया। यह पौलुस की स्वीकृति से हो सकता है या यदि उसकी मृत्यु के बाद लिखा गया तो उसकी स्वीकृति के बिना भी हो सकता है।

तिथि

इब्रानियों की पुस्तक में से पहला ज्ञात उद्धरण 96ईस्वी में क्लेमेंट ऑफ़ रोम का है।[15] कई और विचार 70ईस्वी में मन्दिर के विनाश से पहले की तिथि के साथ होने में भी सहायता करते हैं।

1. यरूशलेम के गिरने का कोई उल्लेख नहीं है, सो नगर अभी स्थिर रहा होगा।

2. याजकों के काम के लिए वर्तमानकाल का इस्तेमाल किया गया था। जो इस बात का संकेत है कि लिखे जाने के समय उनका कार्य जारी था। मन्दिर की सारी सेवकाई 70ईस्वी में मन्दिर के विनाश के साथ सदा के लिए बंद हो गई। डेविड ए. पियेंसी ने कहा है:

> इब्रानियों की पुस्तक में यरूशलेम और मन्दिर के विनाश का कोई हवाला नहीं है–एक ऐसी घटना जिसने मन्दिर की आराधना के अन्त के उसके तर्क को और भी बलपूर्वक बना दिया होगा (देखें इब्रानियों 9 और 10)—पत्री 70ईस्वी से पहले लिखी गई होगी और सम्भवतया 64ईस्वी के लगभग।[16]

3. "छावनी के बाहर निकल" जाने की ताड़ना (13:13) यहूदी मत की ओर स्पष्ट संकेत है जिसका सम्बन्ध यरूशलेम से है। इस वाक्यांश का आने वाले विनाश की भविष्यवाणियों के सम्बन्ध में यहूदिया के लोगों के लिए बड़ा महत्व होगा (मत्ती 24; मरकुस 13; लूका 21:7–28 पर आधारित) । "कोई स्थाई नगर नहीं" (13:14) का मूल्यांकन यरूशलेम के

आने वाले विनाश का परोक्ष हवाला हो सकता है। यह स्पष्ट कहता जाता है कि पुराना प्रबन्ध ''मिट जाने'' को था (8:13)। महायाजक द्वारा किया जाने वाला बलिदान 13:11 में वर्तमान संस्कार बताया गया था। इसका अर्थ यह हुआ कि इब्रानियों की पुस्तक के लिखे जाने की तिथि 70ईस्वी से पहले की होनी चाहिए।

4. 10:32 में बताया गया सताव वह नहीं होगा जो 65ईस्वी और बाद में रोम में नीरो के शासनकाल में हुआ। न कि क्लौदियुस के शासन में रोम से यहूदियों के निकाले जाने की बात ''पिछले दिनों'' से मेल खाती लगती है। 10:32 वाला सताव अवश्य ही इन दोनों में से किसी एक से पहले हुआ होगा।

63-64ईस्वी की तिथि को तर्कसंगत रूप में स्वीकार किया जा सकता है परन्तु पुस्तक 70ईस्वी के निकट ही लिखी गई हो सकती है।

प्राप्तकर्त्ता

इब्रानियों की पुस्तक की इसी से बहुत नज़दीकी से जुड़ा मामला यह तय करना है कि इसे किसने प्राप्त किया। नये नियम की इस पुस्तक की सबसे पुरानी हस्तलिपि, P^{46} में ''इब्रानियों के नाम'' खुदा हुआ है। लगभग 200ईस्वी के बाद से हमारे पास ऐसे ही शीर्षक वाली प्राचीन हस्तलिपियां उपलब्ध हैं। यह शीर्षक शायद दूसरी सदी के अन्त में जोड़ा गया था, जब नये नियम के कैनन की पुस्तकों को एक सग्रंह में डाला गया था। परन्तु यह विचार करने का कोई ऐसा कारण नहीं है कि यह मूल लेख में न हो, और ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि इस पत्री पर किसी और का पता हो।

पहली सदी में ''इब्रानियों'' शब्द पलिश्तीनी यहूदियों को कहीं और रहने वाले यहूदियों से अलग करता था (प्रेरितों 6:1)। यह आज के स्थानीय इस्राएली के लिए आधुनिक शब्द ''साबरा'' के जैसा ही है। बाद में इब्रानियों को जैसा कि यूहन्ना रचित सुसमाचार में मिलता है, ''यहूदी'' कहा जाने लगा। परन्तु यूहन्ना में इस शब्द का अर्थ ''यहूदिया का वासी'' है, जो यहूदिया का होने का संकेत देता है, स्पष्टतया यह यीशु में विश्वास करने वाले गलीलियों से अलग है।

पत्री के प्राप्तकर्त्ताओं की स्थिति अटकल लगाने वाली बात है, परन्तु वचन में बताए गए विचारों से कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। अध्याय 13 यह स्पष्ट कर देता है कि लेखक पाठकों से भली-भांति परिचित था (13:19, 23)। वह उनके पिछले दुखों को जानता था (10:32) और यह भी कि किस प्रकार से उन्होंने अपना सामान खोया था (10:33, 34) परन्तु उनका लहू नहीं बहा था (जैसे याकूब का; 12:2), या उनमें से किसी निकट सम्बन्ध की हानि नहीं हुई थी। ''लहू बहा हो'' यहूदिया की पिछली पीढ़ी के लिए कहा गया हो सकता है (12:4)। यह तथ्य यहूदिया के मसीही लोगों की ओर संकेत कर सकता है, जो प्रेरितों 8:1-4 और 9:1, 2 के बाद की और विशेषकर विश्वासी याजकों के समूह की अगली पीढ़ी थी।

रोम में यहूदी मसीही

पत्री के प्राप्तकर्त्ता तीमुथियुस को व्यक्तिगत रूप में जानते थे (13:23), सो उसके नाम का

उल्लेख कुछ लोगों को यह सुझाव देता है कि यह पत्र किसी रोमी समूह के नाम लिखा गया था। स्पष्टतया वह उस मण्डली में प्रसिद्ध था। परन्तु वह पलिश्तीनी यहूदियों में भी प्रसिद्ध था (देखें प्रेरितों 20:4; 21:3, 8, 15)।

क्लेमेंट के पास रोम में इब्रानियों की एक प्रति थी और उसने इसमें से उद्धृत किया, इस कारण साइमन जे. किस्टमेकर ने सुझाव दिया कि पुस्तक 80ईस्वी के लगभग मसीही लोगों के एक रोमी समूह के नाम लिखी गई थी। निश्चय ही रोम के यहूदी मसीही लोगों को इसमें पाई जाने वाली बातों से बहुत लाभ हुआ हो सकता है चाहे मन्दिर में किए जाने वाले बलिदान की बात और सार्थक होती यदि यहूदिया के गंतव्य तक लिखी जाती।

यदि कोई रोमी प्राप्तकर्त्ताओं के पक्ष में तर्क देता है तो उसे यह याद रखना होगा कि रोमियों 10:25; नीरो के शासनकाल में सताव की बात कर सकता है, जो जल्द ही आने वाला था; यदि वह सताव है तो 63–64ईस्वी की तिथि आवश्यक होनी थी।[17] यदि यह वह सताव नहीं था तो पत्र लिखे जाने का समय डोमिशियन के अधीन होने वाले सताव के तेज होने से थोड़ा पहले 80ईस्वी के अन्त या 90ईस्वी के आरम्भ में होगा। यहां पर बाद वाली तिथि इसके लिखे जाने के लिए सम्भावित होगी और 80 के दशक की तिथि होगी, जिसे किस्टमेकर ने सुझाया था।

परन्तु यदि रोमी सम्बोधन को साबित नहीं किया गया है तो बाद वाली तिथि के लिए किस्टमेकर के तर्क में वास्तव में कोई आधार नहीं है। चाहे उसने माना कि ''इटली वाले तुम्हें नमस्कार करते हैं'' की व्याख्या ''इटली में रहने वाले तुम्हें अपना सलाम भेजते हैं'' के अर्थ में की जा सकती है (13:24)।[18] रोमी प्राप्तकर्त्ताओं का उसका सुझाव इस बात को समाप्त कर देता है।

यदि पत्र रोम की मण्डली या घर की कलीसिया के नाम लिखा गया तो 13:24 का अनुवाद इस प्रकार होगा, ''जो इटली *से* हैं वे तुम्हें सलाम कहते हैं''[19] (NASB)। यह अभिव्यक्ति अस्पष्ट है। इस कारण इसका अर्थ आसानी से इस प्रकार समझा जा सकता है, जैसे आम तौर पर इसका अनुवाद किया जाता है, ''इटली वाले'' (KJV; ASV)। ब्रूक फॉस वेस्टकोट का मानना था कि ''इटली वाले'' का अर्थ है कि लेखक इस पुस्तक के लिखने के समय जहां भी था, इटली से यह छोटा समूह उसके साथ था।[20]

परिवर्तित होने वाले याजकों का एक समूह

यह ''उपदेश की बातें'' (13:22) परिवर्तित होने वाले याजकों के समूह के लिए लिखी गई हो सकती हैं (जैसे प्रेरितों 6:7 वाले)। परन्तु यह प्राप्तकर्त्ता मन में यहूदी मत की ओर खिसकने लगे थे, जो लोगों के उस समूह की स्वाभाविक प्रवृति होगी।[21] इब्रानियों का याजकाई वाला स्वभाव अधिक अन्यजातियों को यहां तक कि मसीही लोगों को भी थोड़ा समझ नहीं आया होगा; परन्तु यह सीधे तौर पर विश्वास करने वाले याजकों के एक घूंट के लिए होगा। इसमें इसकी सामग्री और समय उनके लिए अत्यन्त महत्व का होगा क्योंकि उनके जीवन और उनके प्राण तक इसी पर निर्भर होंगे। विशेष प्रकाशन कि यीशु हमारा ''महायाजक'' है, ने उन्हें ज़बर्दस्त धक्का दिया होगा (इब्रानियों 4:15, 16; 8:1)।

यरूशलेम और पलिश्तीन

हो सकता है कि पुस्तक यरूशलेम और पलिश्तीन के मसीही लोगों को लिखी गई हो। प्राप्तकर्त्ताओं को ''यरूशलेम और पलिश्तीन में'' होने की बात सबसे पहले क्रिसोस्टोम (लगभग 347ईस्वी- लगभग 407ईस्वी) ने इब्रानियों की पुस्तक में अपने परिचय में इसका उल्लेख किया।[22] सम्भावना यह है कि उस क्षेत्र के पाठक मृत सागर के पत्रों की खोज से अधिक स्पष्ट हो गए थे। जिससे कुछ विद्वानों को याजकीय समूह के प्राप्तकर्त्ताओं के रूप में होने के विचार को मानने में आसानी हुई है।

सम्भवतया यरूशलेम की कलीसिया के भीतर किसी समूह को यह पत्री मिली थी क्योंकि उन से अपने अगुओं का सम्मान करने का आग्रह किया गया था और उन्हें अलग सम्बोधित किया गया था (13:17, 24)। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि वे यहूदियों और अन्यजातियों की मिली-जुली कलीसिया था।[23] यूसबियुस का कहना है कि हेदरियन (ईस्वी 132-135) के शासन में विद्रोह तक यरूशलेम की कलीसिया में पूरी तरह से इब्रानी लोग होते थे।[24]

पत्री में यूनानी भाषा की उच्च गुणवत्ता के कारण फिर्येसी ने पलिश्तीनी प्राप्तकर्त्ताओं के विचार पर आपत्ति की है। उस क्षेत्र के मसीही लोगों के लिए यूनानी भाषा केवल ''एक दूसरी भाषा थी और कइयों के लिए अज्ञात या केवल अनगढ़ तरीके से अज्ञात होनी थी।''[25] तौभी यदि प्राप्तकर्त्ता याजक थे तो वे लोगों के सिखाने वाले थे और यूनानी भाषा की जटिलताओं से अच्छी तरह परिचित थे। इसके अलावा किसी दूसरी भाषा में लिखना-पढ़ना और समझना आसान होता है, सो उन्हें पत्री आसानी से समझ आ गई हो सकती है।

इब्रानियों 2:3 का इस्तेमाल यह तर्क देने के लिए किया गया है कि आरम्भिक पाठक यहूदिया के लोग नहीं थे क्योंकि उन्होंने न तो प्रभु को सुना था और न उसे देखा था। इफिसियों 2:3 की तरह लेखक के अपने आपको पाठकों की जगह रखने का यह एक और उदाहरण हो सकता है। इब्रानियों की पुस्तक के लिए 63 या 64 की तिथि समय में बाद में आया विचार है जिसमें आरम्भिक कलीसिया के अधिकतर अगुओं की मृत्यु हो चुकी होगी। (13:7 में भूतकाल पर ध्यान दें।)

यहूदी क्षेत्र में पहुंचने की एक तरह की वैधता इब्रानियों 10:25 की व्याख्या पर निर्भर करती है। वचन की शब्दावली और यीशु की भविष्यवाणियों से मेल खाने के लिए (मत्ती 24; मरकुस 13; लूका 21), ''दिन को निकट आते'' को हज़ारों यहूदियों के दुख सहने ''के दिन'' के रूप में समझना आवश्यक है। यह 70ईस्वी में यरूशलेम के गिरने और मन्दिर के विनाश के साथ ही हुआ। जिस प्रकार से एक व्यक्ति अपनी मृत्यु को आते नहीं ''देख'' सकता यदि बीमारी या घाव का कोई शारीरिक संकेत न हो, उसी प्रकार से कोई मसीह के द्वितीय आगमन को नहीं ''देख'' सकता, क्योंकि उस समय का संकेत देने का कोई ''चिह्न,'' नहीं है। मत्ती 24, मरकुस 13 और लूका 21 में यीशु द्वारा बताए गए चिह्न, यरूशलेम के गिरने की ओर संकेत करते हैं न कि समय के अन्त का। इन वचनों में यीशु द्वारा बताए गए यरूशलेम के गिरने की घटनाओं की भविष्यवाणी करते चिह्नों को समझा जा सकता है क्योंकि वे 66 से 70ईस्वी में पूरे हो रहे थे।

यीशु द्वारा दिए गए गिरने के चिह्नों के उलट उसने आगे यह कहते हुए अपने द्वितीय आगमन की बात बताई, ''उस दिन और उस घड़ी के विषय में कोई नहीं जानता, न स्वर्ग के दूत ... परन्तु

केवल पिता'' (मत्ती 24:36)। उसकी वापसी का संकेत देने वाला कोई चिह्न नहीं है। इसके बजाय बताए गए सभी चिह्न केवल उन घटनाओं के हैं, जो होने वाली थीं और उन में 70ईस्वी में यरूशलेम का विनाश भी था।[26] यह व्याख्या यहूदी पवित्र लोगों के लिए आयत के अर्थ को रोम या कहीं और रहने वालों के बजाय बहुत बढ़ा देती है, जो पत्र के आरम्भिक प्राप्तकर्त्ता होंगे।

इसका अर्थ है कि सबसे बढ़िया निष्कर्ष यह होगा कि यह लेख यहूदिया के लिए लिखा गया था, जहां इसकी आवश्यकता थी और निश्चय ही यरूशलेम के गिरने की मसीह की पहले की गई भविष्यवाणियों को पाठकों को याद दिलाने के लिए होना था। इन ताड़नाओं ने उन्हें विश्वास योग्य बने रहने में सहायता करनी थी, चाहे उन्हें यरूशलेम के विनाश का समय निकट आने पर यरूशलेम से भागकर अपने प्राणों को बचाना आवश्यक होना था। लिखे जाने की तिथि 70ईस्वी से थोड़ा पहले की लगती है। मन्दिर अभी भी खड़ा था, परन्तु गिरने वाला था।

पत्र निश्चित रूप से उस इलाके के लोगों के लिए हो सकता है, जहां सच्चे ''इब्रानी'' अभी भी पहली सदी के सातवें दशक के मध्य में रहते थे। एफ़. एफ़. ब्रूस ने लिखा है,

> ... निश्चित रूप में पत्री के घनत्वय पर हमारे ज्ञान की वर्तमान स्थिति में पहुंचना असम्भव है, और सौभाग्य से इसका एक्सजेसस यानी व्याख्या इस प्रश्न से अधिकतर भाग स्वतन्त्र है।[27]

पुस्तक के कैनन की बात

इस कारण लेखक का प्रश्न कैनन के प्रश्न को प्रभावित करता है जो पूछता है, ''क्या इब्रानियों की पुस्तक बाइबल की पुस्तक है? क्या यह सचमुच 'पवित्र शास्त्र' है?'' कैनन में पत्री के स्थान को पहली तीन शताब्दियों के दौरान पूर्व में नकारा नहीं जाता था। यूसबियुस (लगभग 263-339) ने इसे स्वीकृत लेखों में रखा था, परन्तु उन पुस्तकों में भी जिनके परमेश्वर की प्रेरणा से होने पर विवाद था।[28]

पश्चिम में क्लेमेंट ऑफ़ रोम द्वारा इब्रानियों की पुस्तक को स्पष्ट रूप में कैनन की पुस्तक माना गया। उसके इस विश्वास के आधार पर कि इसे पौलुस द्वारा लिखा गया था, उसकी स्वीकृति को माना जा सकता है। पोलिकार्प ने भी 115ईस्वी के लगभग पश्चिम में ही, मसीह को ''सनातन याजक'' कहा, जो कि इब्रानियों की पुस्तक की गूंज है।[29] परन्तु पत्री को पश्चिम में बहुत देर तक स्वीकार नहीं किया जाता था। 393ईस्वी में सिनड ऑफ़ हिप्पो से पहले तक हमारे नये नियम की सताईस पुस्तकों को आधिकारिक रूप में नहीं दिया गया था।

रोम के क्लेमेंट द्वारा उद्धृत किए जाने या कई बार संकेत देने पर किसी को आश्चर्य हो सकता है कि पश्चिम में इब्रानियों की पुस्तक को पवित्र शास्त्र के भाग के रूप में स्वीकार करने में इतना समय क्यों लग गया। संक्षेप में इसका कारण इसके प्रेरित पौलुस के इसका लेखक होने के प्रमाण की कमी था। यदि पत्री रोम में लिखी गई और पूर्व (यहूदिया) में भेजी गई तो रोम के लोग जल्द ही भूल गए होंगे कि इसे किसने लिखा है। इसी कारण क्लेमेंट के समय के बाद उन्होंने इसे इस्तेमाल करना बन्द कर दिया हो सकता है। इसके अलावा इस तथ्य के कारण भी कि पत्री में यरूशलेम के विनाश से पहले यहूदिया में अपनाए जाने वाले यहूदी धर्म से सम्बन्धित बातें थीं। कलीसिया के आरम्भ से इब्रानियों के लिखे जाने तक 35 साल बीत जाने के बाद और

क्लेमेंट के लेखों के तीस और सालों के बाद रोम के बहुत से आरम्भिक सदस्य मर गए होंगे; तब तक उस क्षेत्र में इब्रानियों के लेखक की बात आसानी से भुला दी गई होगी। यदि ऐसा हुआ तो शायद यह इस बात का खुलासा कर देता है कि ञयों रोम की कलीसियाएं इब्रानियों की पुस्तक को इसका बनता श्रेय नहीं दे पाईं, जिससे इसके कैनन होने की बात पर संदेह उत्पन्न हुए।

इसके विपरीत इब्रानियों की पुस्तक को पूर्व में पौलुस की पुस्तक के रूप में माना जाता था। पत्र को प्राप्त करने वालों को इसके लेखक की बात याद आती होगी। इसके अलावा किसी सरमन के बजाय किसी लेख को याद रखना आसान होता है, विशेषकर जब उस लेख को लगातार और ध्यान से अध्ययन किया जाता हो।

पुस्तक का एक अतिरिक्त कार्य

70ईस्वी में यरूशलेम से दो बचावों ने यहूदी मत के भविष्य को बुरी तरह से प्रभावित किया। एक तो रब्बी योहनोन बेन जकई के द्वारा था जिसे एक कफ़न में ले जाया गया और उसने यहूदी रीतियों को फिर से मनवाने के लिए रोमी सेनापति वेस्पेसियन का साथ दिया। उसके काम से रब्बियों के यहूदी मत का आधार बन गया।

दूसरा बचाव यरूशलेम में विश्वासी कलीसिया का था। यूसबियुस के अनुसार मसीही लोग मसीह की आज्ञा की पूर्ति करते हुए (मत्ती 24:15, 16; मरकुस 13:14; लूका 21:20, 21) दिकापुलिस में एक अन्यजाति नगर पेला को भाग गए। जैसा कि जोसेफ़स ने बताया है यह मसीही लोग तब बचे जब रोमी सेना ''संसार में बिना किसी कारण'' निकल गई।[30] वेस्पेसियन और टाइटस के अधीन रोमियों के शासन में रोमियों के लौटने से मन्दिर नष्ट हो गया और प्राचीन यहूदी संसार और आराधना सदा के लिए संसार से उठ गए।

यहूदी आराधना की प्रकृति में इस जबर्दस्त बदलाव से नये नियम की शिक्षाओं की पूरी समझ आने लगी कि कलीसिया अब ''परमेश्वर का मन्दिर'' है (इफिसियों 2:19–22; 1 पतरस 2:4–8)। यदि इब्रानियों की पुस्तक 63–67ईस्वी के बीच कहीं लिखी गई तो यह यहूदी मसीही लोगों को अपने मन्दिर की हानि और जो कुछ उसके साथ जुड़ा था, से उभरने के लिए तैयार होने का बिल्कुल सही समय था। परमेश्वर के उपाय में यह पुस्तक बहुत कुछ उसी प्रकार से जैसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक ने बाद के तीस वर्षों के सताव का सामना करने में पूरी कलीसिया को सांत्वना दी, यहूदी मसीही लोगों के लिए भविष्यद्वाणी के अनुसार सांत्वना दी हो सकती है।

इब्रानियों की पुस्तक और पुराने नियम के उद्धरण

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने 150 ई.पू. में पूरे हुए पुराने नियम के यूनानी अनुवाद सप्तत्ति (LXX) से बाइबल से अपने हवाले लिए।[31] उसने पूरे पुराने नियम को परमेश्वर के सच्चे वचनों के रूप में देखा। इब्रानियों 3:7 ''जैसा पवित्र आत्मा कहता है'' वाक्यांश के साथ भजन संहिता 95:7–11 से एक उद्धरण देता है। लेखक ने यह भी कहा कि पुराने नियम की कुछ बातें (9:8) ''पवित्र आत्मा दिखा'' रहा था। भजन संहिता 40:6–8 के शब्द इब्रानियों 10:5–7 में मसीहा के शब्द माने जाते हैं। पुराने नियम के इन उद्धरणों के लिए परमेश्वर की प्रेरणा का कोई और उच्च विचार सम्भव नहीं है।

पुस्तक की शैली

इब्रानियों की पुस्तक की शैली नये नियम की किसी अन्य पुस्तक से मेल नहीं खाती; क्योंकि इसका आरम्भ एक लेख के रूप में होता है, फिर यह उपदेश बन जाती और इसका अन्त एक पत्र के रूप में होता है।[32] जेम्स थॉमसन का कहना है कि इब्रानियों की पुस्तक की शैली प्राचीन सिनागोग के उपदेश जैसी, विचार की गाड़ी और तर्क का ढंग है।[33]

संरचनात्मक रुपरेखा

I. मसीह का व्यक्तित्व (1:1—4:13)
   क. ईश्वरीय स्वभाव (1)
   ख. मानवीय स्वभाव (2)
   ग. भविष्यद्वाणी की बात (3:1—4:13)

II. मसीह की याजकाई (4:14—10:18)
   क. उसका पद (4:14—7:28)
   ख. याजकाई का उसका काम (8:1—10:18)
      1. नई वाचा (8)
      2. प्रायश्चित (9)
      3. बलिदान (10:1–18)

III. काम का अनुमोदन और प्रासंगिकता (10:19—12:29)
   क. सुविधा और जोखिम (10:19–39)
   ख. विश्वास की विजयें (11)
   ग. प्रसंगिकता (12)

IV. व्यक्तिगत उपसंहार (13)

टिप्पणियां

[1]रेय सी. स्टेडमैन, *हिब्रूज़,* द IVP न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोयः इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 9. [2]सिडनी जी. सोवर्स का मानना था कि इब्रानियों का लेखक "फिलो की तरह यहूदी मत की सिकन्द्री पाठशाला से ही आया।" उसने LXX के कुछ लेखों का उल्लेख किया जिनकी पुष्टि केवल फिलो और इब्रानियों में ही होती है। (सिडनी जी. सोवर्स, *द हरमेनियुटिक्स ऑफ फिलो एंड हिब्रूज़,* बेसल स्टडीज़ ऑफ थियोलॉजी, नं. 1 [रिचमंड, वर्जीनियाः जॉन नॉक्स प्रैस, 1965], 66–68.) [3]साइमन जे. किस्टमेकर, *एक्पोज़िशन ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगनः बेकर बुक हाउस, 1984), 7. [4]टरटुलियन *ऑन मोडेस्टी* 20. [5]स्टेडमैन, 10. [6]डेविड ए. फिएन्सी, *न्यू टैस्टामेंट इंट्रोडक्शन,* एक्सप., द कॉलेज प्रैस NIV कमैंट्री (जोप्लिन, मिजोरीः कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1994), 330. [7]डोनल्ड गुथरी ने कहा, "यदि 'उपदेश की बात' जैसा कि प्रेरितों 13:15 में है, उपमा है, तो इससे यह सुझाव मिलेगा कि पत्र का ढांचा किसी विशेष अवसर पर दिए गए उपदेश में से लेकर बाद में उसे अन्त में व्यक्तिगत टिप्पणियां जोड़ कर पत्र का रूप दे दिया गया" (डोनल्ड गुथरी,

द लैटर टू द हिब्रूज़: ऐन इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री, द टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़ [ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1983], 31)। [8]यूसबियुस *इकलेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 6.14. [9]वही, 6.25. ओरिगन ने लेखक पौलुस को बताया। [10]जेरोम *लैटर्स* 129.3. यह अनुवाद क्रेग आर. कोस्टर, *हिब्रूज़: ए न्यू ट्रांसलेशन विद इंट्रोडक्शन एंड कमैंट्री,* द एंकर बाइबल, अंक 36 (न्यू यॉर्क: डबलडे, 2001), 27 से लिया गया है।

[11]विलियम लियोनार्ड, *ऑथरशिप ऑफ़ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (रोम: वेटीकन पोलीगोट प्रैस, 1939), 18. इस विद्वान ने वकालत की कि इब्रानियों लिखे जाने के पीछे ''पौलुसी सोच'' थी। [12]वही। [13]थॉमस जी. लॉन्ग, *हिब्रूज़,* इंटरप्रेटेशन (लुइसविल्ले: जॉन नॉक्स प्रैस, 1997), 4. [14]लियोनार्ड, 24–26. [15]यह दिखाने के लिए कि पहली सदी के अन्तिम भाग में रहने वाले लेखक को जिसने कुरिन्थुस की कलीसिया के नाम रोम की कलीसिया से पत्र (फर्स्ट एपिस्टल ऑफ क्लेमेंट) लिखा, इब्रानियों की पुस्तक का पता था, जेम्स मॉफ़ट ने क्लेमेंट आफ़ रोम का उल्लेख किया। (जेम्स मॉफट, *ए क्रिटिकल एंड एक्सेजेटिकल कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* [न्यू यार्क: चार्ल्स स्क्रिब्नर'स सन्स, 1924; रिप्रिंट, एडिनबर्ग: टी. एंड टी. क्लार्क, 1952], xiii-xiv.) [16]फिएंसी, 325. [17]वही, 325. [18]किस्टमेकर, 16–18. [19]विलियम हैंड्रिक्सन, *बाइबल सर्वे: ए ट्रयरी ऑफ़ बाइबल इन्फरमेशन,* 3रा संस्क., संशो. व विस्तार (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1947), 429. [20]ब्रूक फॉस वेस्टकोट, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़: द ग्रीक टैक्स्ट विद नोट्स एंड ऐसेस* (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1889; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1973), xliv.

[21]मसीह में आने आने के बाद मनपरिवर्तन करने वाले याजकों को जिन बातों का सामना करना पड़ा उनका विस्तृत विवरण गुथरी, 33–34 में है। उसने उनका विवरण ''नाचीज़ों'' के रूप में किया और यह मान लिया कि उन्हें याजकाई वाले काम तुरन्त छोड़ने पड़े थे, जो कि लगता नहीं है कि आवश्यक हो। [22]क्रिसोस्टोम *होमिलीस ऑन द एपिस्टल ऑफ़ द हिब्रूज़* आरग्यूमेंट 2 की पत्री का उपदेश देता है। [23]वेस्टकोट, xxxvi. [24]यूसबियुस *एक्ल्रेसिएस्टिकल हिस्टरी* 4.5. [25]फिएन्सी, 326. [26]यह तथ्य कि मत्ती 24 में यीशु प्रेरितों को ''तुम'' कहता रहा संकेत देता है कि उन्होंने और उनके समय की जीवित ''पीढ़ी'' के लोगों ने इसे पूरा होते देखना था (24:34)। [27]एफ. एफ. ब्रूस, *द एपिस्टल टू द हिब्रूज़,* द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1964), xxxv. [28]यूसबियुस *एक्लेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 3.3; 6.13. [29]पोलीकार्प *एपिस्टल टू द फिलिपियंस* 12; विलियम लियोनार्ड, *ऑथरशिप ऑफ द एपिस्टल टू द हिब्रूज़* (रोम: वेटिकन पोलीग्लोट प्रैस, 1939), 5. [30]जोसेफस *वार्स* 2.19.1.

[31]10:30 में अपवाद मिलता है, जो पुराने नियम के धर्मशास्त्र के यूनानी संस्करण की बात को अलग ढंग से कहा गया है या उसमें से लिया गया है जिसका आज हमें पता नहीं है। यह वही संस्करण है जिसे रोमियों 12:19 में पौलुस ने दौहराया है। [32]नील आर. लाइटफुट, *जीज़स क्राइस्ट टुडे: ए कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ हिब्रूज़* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1976), 43. [33]जेम्स थॉम्पसन, *द लैटर टू द हिब्रूज़,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1971), 8.

रूपरेखा

मसीह की श्रेष्ठता

I. मसीह और उसका काम (1:1—10:18)
  क. मसीह, पुत्र (1:1—4:13)
    1. मसीह, भविष्यद्वक्ताओं से श्रेष्ठ (1:1–3)
      क. परमेश्वर ने बात की है (1:1, 2)
      ख. पुत्र का स्वभाव और महिमा (1:2, 3)
    2. मसीह, स्वर्गदूतों से श्रेष्ठ (1:4—2:18)

क. मसीह, परमेश्वर का पुत्र (1:4-14)
ख. मसीह, मनुष्य का उद्धारकर्त्ता (2:1-18)
(1) अवहेलना के विरुद्ध चेतावनियां (2:1-4)
(2) मसीह का बलिदान और ऊंचा किया जाना (2:5-18)
(क) मसीह का स्वर्गदूतों से कम किया जाना और मृत्यु को चखना (2:5-8)
(ख) मसीह, हमारे उद्धार का कर्त्ता (2:9-13)
(ग) मसीह का जो दुःख उठाने वाला है, ऊंचा किया जाना (2:14-18)
3. मसीह, मूसा से श्रेष्ठ (3:1—4:13)
क. मसीह, प्रेरित और महायाजक (3:1-6)
ख. मसीह का विश्राम (3:7—4:13)
(1) कठोर हृदय के विरुद्ध चेतावनियां (3:7-19)
(क) पवित्र शास्त्र का प्रमाण (3:7-11)
(ख) इस्राएल की नाकामी का कारण (3:12-19)
(2) इस्राएल की प्रतिज्ञा मसीही लोगों के लिए खुली (4:1-13)
(क) सब्त के विश्राम की तीन ताड़नाएं (4:1-4)
(ख) सब्त का विश्राम रहता है (4:5-11)
(ग) मसीही लोगों के लिए परमेश्वर का वचन (4:12, 13)
ख. मसीह की महा याजकाई (4:14—10:18)
1. उसका पद (4:14—7:28)
क. हारून से बढ़कर महायाजक के रूप में मसीह की श्रेठता (4:14—5:10)
(1) परमेश्वर तक मसीह की पहुंच (4:14-16)
(2) महायाजक की भूमिका (5:1-4)
(3) हमारा महायाजक होने के लिए मसीह की योग्यताएं (5:5-10)
ख. सिद्धता की ओर बढ़ने के लिए चेतावनी और ताड़ना (5:11—6:20)
(1) अवहेलना करने की नाकामी (5:11-14)
(2) विश्वासत्याग (बेदीनी) की चेतावनी (6:1-8)
(3) ईश्वरीय प्रतिज्ञाओं का आश्वासन (6:9-20)
ग. मलिकिसिदक की अद9भुत सेवकाई (7:1-28)
(1) अब्राहम और मलिकिसिदक (7:1-10)
(2) मलिकिसिदक की तरह मसीह का महायाजक होना (7:11-22)
(3) मसीह का सिद्ध और स्थिर याजकाई का काम (7:23-28)
2. याजकाई का उसका काम (8:1—10:18)

क. मसीह की सेवकाई की श्रेठता (8:1–13)
    (1) उसकी नई सेवकाई (8:1–5)
        (क) असली तम्बू का सेवक (8:1, 2)
        (ख) याजक जिसके पास चढ़ाने के लिए कुछ है (8:3, 4)
        (ग) नमूने के अनुसार याजक (8:5)
    (2) उसकी नई वाचा (8:6–13)
        (क) उत्तम प्रतिज्ञाओं वाली वाचा (8:6, 7)
        (ख) उस वाचा के समान नहीं जिसे तोड़ा गया था (8:8, 9)
        (ग) मनों और हृदयों के ऊपर लिखी गई वाचा (8:10–12)
        (घ) वाचा जो कभी पुरानी नहीं होगी (8:13)
ख. नई वाचा की श्रेष्ठता (9:1–28)
    (1) तम्बू से सबक (9:1–10)
        (क) पवित्र स्थान और इसका सामान (9:1, 2)
        (ख) परम पवित्र स्थान (9:3–5)
        (ग) प्रायश्चित का दिन (9:6, 7)
        (घ) केवल प्रतीक और चिह्न (9:8–10)
    (2) मसीह की मृत्यु और प्रायश्चित (9:11–15)
        (क) मसीह के प्रायश्चित की श्रेष्ठता (9:11–14)
        (ख) बलिदानी मृत्यु और अनन्त मीरास (9:15)
    (3) मसीह नई वाचा बांधने वाले के रूप में (9:16–22)
        (क) कोई वाचा कब पक्की होती है (9:16, 17)
        (ख) पुराने नियम का लहू (9:18–20)
        (ग) बिना लहू के कुछ भी मिटाया नहीं गया (9:21, 22)
    (4) परमेश्वर की उपस्थिति में मसीह का जाना (9:23–28)
        (क) स्वर्ग के नमूने (9:23, 24)
        (ख) यीशु ने एक ही बार चढ़ाया (9:25, 26)
        (ग) एक मृत्यु, उसके बाद न्याय (9:27, 28)
ग. मसीह के बलिदान की श्रेष्ठता (10:1–18)
    (1) बलिदानों का स्थान (10:1–10)
        (क) वे प्रतिबिम्ब थे (10:1, 2)
        (ख) वे स्मरण के लिए थे (10:3, 4)
        (ग) वे वास्तविक बलिदान का प्रतिरूप थे (10:5–7)
        (घ) वे पहली वाचा थे (10:8–10)
    (2) मसीह के लहू के द्वारा पवित्र किया गया (10:11–18)
        (क) मसीह, हमारा बैठा हुआ याजक (10:11, 12)
        (ख) मसीह, हमारा राह देखता प्रभु (10:13, 14)

(ग) मसीह, हमारा पूरा प्रायश्चित (10:15-18)

II. विश्वास की चाल (10:19—13:25)

क. विश्वास, ''एक नया और जीवित मार्ग'' (10:19—12:29)

1. परमेश्वर तक श्रेष्ठ पहुंच (10:19-39)

क. भरोसे का कारण (10:19-25)

ख. चेतावनी: पाप जिससे मृत्यु आती है (10:26-31)

ग. याद रखने के लिए ताड़ना (10:32-39)

2. सक्रिय विश्वास (11:1-40)

क. विश्वास का एक विवरण (11:1)

ख. विश्वास का प्रकटावा (11:2, 3)

ग. धर्मियों का एक चित्रण (11:4-7)

घ. विश्वासियों का पिता (और माता) (11:8-12)

ङ. ये विश्वास के योग्य थे, चाहे उन्हें परमेश्वर की प्रतिज्ञा प्राप्त नहीं हुई (11:13-16)

च. विश्वासी लोग जिन्हें दुख उठाने के द्वारा परखा गया (11:17-29)

छ. इस्राएल का और राहेल का विश्वास (11:30, 31)

ज. विजयी नायक और विश्वास के दु:ख उठाने वाले नायक (11:32-38)

झ. सब विश्वासयोग्य लोगों की एक समीक्षा (11:39, 40)

3. विश्वास की सबसे बढ़कर शक्ति (12:1-29)

क. मसीह, हमारे विश्वास का सिद्ध करने वाला (12:1-3)

ख. परमेश्वर की संतान के रूप में अनुशासन (12:4-11)

ग. परमेश्वर के अनुग्रह की खोज करने और विश्वास का जीवन जीने के लिए प्रोत्साहन (12:12-17)

घ. सीनै की महिमा और सिय्योन/''स्वर्गीय यरूशलेम'' की उससे बड़ी महिमा में अंतर (12:18-24)

ङ. अंतिम चेतावनी: परमेश्वर का इनकार करने का खतरा (12:25-29)

ख. अंतिम उपदेश (13:1-25)

1. प्रेम करना याद रखें (13:1-6)

2. पुराने अगुवों और हमारे महायाजक को याद रखो (13:7-16)

3. वर्तमान अगुवों के अधीन रहो और दूसरों के लिए प्रार्थना करो (13:17-19)

4. परमेश्वर तक और भाइयों तक पहुंच रखो (13:20-25)